डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

Date
Page 09|05|20

विषय- संस्कृत, बी०ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र
काव्य इतिहास और व्याकरण

महाभारत का महत्त्व :-

भारतीय संस्कृति में महाभारत का एक विशिष्ट स्थान है। भारतीय सभ्यता तथा हिन्दुधर्म का जैसा सर्वाङ्गीण चित्रण यहाँ प्राप्त होता है वैसा अन्यत्र नहीं है। महाकाव्य अपने विषय में स्वयं कहता है- "यन्न भारते तन्न भारते" अर्थात् जो महाभारत में नहीं है वह भारतवर्ष में ही नहीं हो सकता।

सत्य और धर्म ही इस महाकाव्य के मुख्य उद्देश्य हैं। महाभारत हमें जो कुछ युधिष्ठिर ने किया वह सब करने के लिए और जो कुछ दुर्योधन ने किया उससे बचने के लिए प्रेरित करता है। पाण्डव धर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं इसके विपरीत दुर्योधन और उसके भाई अधर्म का। महाकाव्य की कथा धर्म और अधर्म के मध्य होने वाले संघर्ष की कथा है। भगवान् कृष्ण स्वयं, भीष्म पितामह, नीतिविद् विदुर, कुल गुरु, द्रोणाचार्य आदि सभी दुर्योधन को धर्म की महत्ता बतलाते हुए उसे अनुचित कार्य करने से रोकते हैं परन्तु वह इस पर ध्यान नहीं देता और अन्त में विनाश को प्राप्त होता है। महर्षि व्यास स्वयं इस काव्य के अन्त में कहते हैं-

ऊर्ध्वबाहुः विरौम्येष न च कश्चिच्छृणोति माम्।
धर्मादर्थश्च कामश्च स धर्मः किन्न सेव्यते ॥

इस काव्य मे ही धर्म का संदेश एक सूत्र के समान

के भिन्न-भिन्न भागों को परस्पर एक डोर से सम्बन्धित करता है।

अध्यात्म, धर्म और नीति का जितना विशद् विवेचन महाभारत में हुआ है वैसा अन्यत्र प्राप्त नहीं होता। शान्ति और अनुशासन पर्व में भीष्म मृत्यु शय्या पर लेटे हुए युधिष्ठिर को राजधर्म, वर्णधर्म, आश्रम धर्म, दानधर्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म, मन्त्रियों के गुण, करनीति, कूटनीति, दण्डनीति इत्यादि के विषय में बहुत ही सुन्दर और स्पष्ट उपदेश देते हैं जो सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। नीति का उपदेश देते हुए भीष्म कहते हैं—

यस्मिन् यथा वर्तते यो मनुष्यः,
तस्मिंस्तथा वर्तितव्यं स धर्मः।
मायाचारो मायया वर्तितव्यः,
साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः ॥
उद्योगपर्व 37-7

महाभारत का महत्व गीतोपदेश के कारण और भी अधिक बढ जाता है। यह युद्ध से विमुख अर्जुन को पुनः युद्ध के लिए प्रेरित करने के लिए भगवान् कृष्ण द्वारा स्वयं कही गई—

या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिःसृता ॥

इसमें कर्मयोग, भक्ति मार्ग तथा ज्ञानमार्ग तीनों का समन्वय स्थापित किया है। इसका महावाक्य है—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन,

अर्थात् कर्म करने में ही मनुष्य का अधिकार

है, उसके फल में नहीं। गीता का केवल भारत में ही नहीं अपितु समस्त संसार में विश्वव्यापी प्रचार हुआ है। यद्यपि गीतोपदेश अर्जुन को युद्ध के लिए पुनः प्रेरित करने के लिए दिया गया है तथापि इस गीतोपदेश में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जीवन का पूर्ण दर्शन ज्ञान करवाया है। जीवन दर्शन का यह ज्ञान केवल अर्जुन से ही सम्बद्ध न होकर सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सार्वक है।

महाभारत ज्ञान का विशाल भण्डार है। यह तत्कालीन सामाजिक अवस्था का विशद् विवेचन करता है। उस समय की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, तथा नैतिक सभी अवस्थाओं पर तथा उस समय प्रचलित रीतिरिवाजों, अन्ध विश्वासों आदि सभी पर प्रभूत प्रकाश डालता है।।

महाभारत में कई उपाख्यान प्राप्त होते हैं। इनमें से कुछ प्राचीन ऋषियों तथा राजाओं के जीवन से सम्बन्धित होने के कारण घटना प्रधान है। कुछ ऐतिहासिक होने के कारण प्राचीन इतिहास की अमूल्य निधि है। कुछ तत्कालीन लोक कथाओं पर आधारित है। इनमें शकुन्तला, राम, मत्स्य, नल, सावित्री, गंगावतरण, परशुराम, च्यवन, शिवि, ययाति इत्यादि के उपाख्यान काव्यात्मक सौन्दर्य से भरपूर है। इस प्रकार महाभारत को 'पञ्चम वेद' या 'विश्वकोष' कहना पूर्णतः उचित है। मनुष्य जीवन के चारों पुरुषार्थों का वर्णन भी इस काव्य में हुआ है। इति।।

Scanned with CamScanner